25

परम्परागत माध्यम : एक परिचय

इसके पूर्व के अध्यायों में आपने संचार के विषय में पर्याप्त अध्ययन कर लिया है। संचार हेतु प्रयुक्त विविध जन माध्यमों तथा हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में संचार के उपयोग का भी आपने अध्ययन किया है। लेकिन यह जानना भी आवश्यक है कि संचार केवल प्रिंट, टेलीविजन, रेडियो, फोटोग्राफी, इंटरनेट इत्यादि तक ही सीमित नहीं है। संचार के और भी रूप हैं जो आपके पास चारों ओर मौजूद है।

क्या आपको खुद का देखा हुआ कोई न त्य प्रदर्शन, जादू का कार्यक्रम या मेला–त्यौहार याद है? क्या आप मानते हैं कि यह सभी रूप अपने द्वारा मनोरंजन, शिक्षा या सूचनाप्रद कोई संदेश संप्रेषित करते हैं।

क्या आपने कभी सोचा है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अस्तित्व से पूर्व लोग आपस में किस तरह एक–दूसरे से अपने सुख–दुख तथा सूचनाएँ बाँटते थे। वह कौन से माध्यम थे जो उन्हे एक–दूसरे से संचार में मदद करते थे। इस अध्याय में आप उनमें से कुछ माध्यमों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित करने में सक्षम हो सकेंगेः–

- परम्परागत माध्यम को परिभाषित करना;
- परम्परागत माध्यमों के विविध रूपों की पहचान करना;
- परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में अन्त करना;
- संचार में परम्परागत माध्यमों के उपयोग की चर्चा।

25.1 परम्परागत माध्यम की परिभाषा

आज भी ऐसे अनेक गाँव हैं जहाँ बिजली की सुविधा नहीं है। इन जगहों पर रहने वाले लोग टेलीविजन देखना या इंटरनेट उपयोग नहीं कर पाते हैं। इसी तरह अनपढ़ लोग समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ नहीं पढ़ सकते हैं। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वे संचार नहीं करते। उन्होंने स्थानीय भाषा तथा संस्क ति पर आधारित संचार के विविध तरीकों का विकास किया है।

आपने अपने माता–पिता या दादा–दादी से 'रामायाण', 'महाभारत' तथा देश पर राज कर चुके राजा–रानियों की अनेक कहानियाँ सुनी होंगी। इसी तरह तीज–त्यौहार तथा परम्पराओं एवं किस तरह अच्छा इंसान बनें इस बारे में भी ढेरों कहानियाँ मौजूद हैं। इस तरीके से सूचनाएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती हैं तथा परम्परागत माध्यमों के विविध रूप विकसित होते हैं।

अतः अब हम परम्परागत माध्यमों को परिभाषित कर सकते हैं।

गैर–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जो हमारी संस्क ति के एक भाग के रूप में कार्य करते हैं तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परम्पराओं के हस्तांतरण का साधन बनते हैं परम्परागत माध्यम कहलाते हैं।

***क्रियाकलाप 25.1:-** परम्परागत माध्यमों के विविध रूप को स्पष्ट करने वाले अगले खंड का अध्ययन करने से पूर्व क्या आप कुछ परम्परागत माध्यम के रूपों को स्पष्ट कर सकते हैं जो आपके आसपास सुलभ हों।*

परम्परागत माध्यमों के विविध रूप होते हैं तथा देश के विभिन्न हिस्सों में इन्हें अलग–अलग नामों से जाना जाता है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश में 'जनपदम' गाँव को तथा 'जनपदुलु' गाँववासियों को कहते हैं। गाँव के लोककला रूपों को समग्र रूप से 'जनपद कलालु' कहते हैं। इसी तरह 'लोकनाट्य' या 'लोकगीत' का अर्थ 'जनन त्य' या 'जनगान' होता है। भारत के अन्य राज्यों में भी लोककलाओं के विविध रूप प्रचलित हैं। यह 'लोक माध्यम' या 'जनता के माध्यम' के रूप में उपयोग होते हैं। यह रूप लोगों के वक्तव्य, शैली, संगीत, न त्य, पोशाक, व्यवहार इत्यादि की झलक दिखाकर लोक का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परम्परागत माध्यमों के उपकरण विश्वास, रीति–रिवाज तथा परम्परागत जीवन पद्धति से विकसित होते हैं जिसका उपयोग लोग करते रहे हैं। यह पुरानी तथा जड़ों से जुड़ी होती हैं।

इस प्रकार परम्परागत माध्यम संचार के उस रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं जो गायन, शाब्दिक, सांगितिक तथा द श्य कलारूप के माध्यम से समाज या विविध समाज समूहों

में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं। यह स्थानीय रूप से विकसित हैं तथा सदियों से संचार के उपकरण अथवा माध्यम के रूप में व्यवहार में हैं।

क्या संचार के यह परम्परागत माध्यम अभी भी मौजूद हैं? हाँ वे हैं। उनकी विषयवस्तु, संस्क ति तथा रूपों में भिन्नता हो सकती है परन्तु उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है। कुछ लोकप्रिय उदाहरण रंगोली (घरेलू रंगों के चूर्ण का उपयोग कर प्रतिरूप निर्माण की कला) कथावाचन, नाटक तथा कठपुतली हैं।

पाठगत प्रश्न 25.1

1 परम्परागत माध्यम को परिभाषित करें।

2 आज भी प्रचलित परम्परागत माध्यम के तीन रूपों के नाम लिखें।

i) ____________________

ii) ____________________

iii) ____________________

25.2 परम्परागत माध्यमों के विविध रूप

परम्परागत माध्यम का रूप कुछ भी हो सकता है जो आपके परिवार , मित्रों या समग्र रूप से समाज में संचार के उद्देश्य की पूर्ति करता हो। सभी रूपों का लोकप्रिय होना आवश्यक नहीं परन्तु वे संचार में सहायक होते हैं। आप पहले ही देख चुके हैं कि यह रूप विभिन्न समुदाय तथा क्षेत्रों में अलग होते हैं। आपकी समझ के लिए इन्हें निम्नांकित रूपों में वर्गीक त किया जा सकता है–

- परम्परागत न त्य
- नाटक
- चित्रकला
- मूर्तिकला
- गीत
- संगीत
- प्रधान विचार तथा प्रतीक

यह तथ्य भी रोचक है कि परम्परागत माध्यम के कुछ रूपों में उपरोक्त सभी प्रकार के प्रयोग किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए पारम्परिक शैली में भगवान राम की कथा की लोकनाट्य के रूप में प्रस्तुति का रूप 'रामलीला' उत्तर भारत में लोकप्रिय है जिसमें उपरिवर्णित सभी रूप सम्मिलित हैं।

चित्र 25.1 (क): उद्घोषणा (मुनादी)

- संचार के लोकप्रिय पारम्परिक रूपों में से एक है 'नगाड़ा' या 'ढोल' बजाकर मुनादी या उद्घोषणा करना। नगाड़े की थाप पर एक गाँव से दूसरे गाँव तक संदेश पहुँचाए जाते हैं।

चित्र 25.1: (ख) नगाड़ा

- **कठपुतली** भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त परम्परागत माध्यम का लोकप्रिय रूप है। छाया कठपुतली तथा डोर कठपुतली इसके लोकप्रिय रूप हैं।
- **पट चित्रकथा** में ताड़पत्र पर चित्रों के रूप में वाचन की जाने वाली कथाएँ होती हैं।
- **कथा कहना** परम्परागत माध्यम रूप है जो उस समय से प्रचलन में रहे हैं जब परिष्क त संचार रूप जैसे लिखित शब्द अस्तित्व में नहीं आए थे। उदाहरण के लिए स्थानीय नायकों की वह ऐतिहासिक कथाएँ जिनमें उनके लड़ाइयों में या स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने का वर्णन है, इन्हें गीत तथा नाटक के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। यह कहीं लिखकर या दस्तावेज के रूप में संरक्षित नहीं किए गये। इसके विपरीत यह मौखिक संचार के माध्यम से एक घर से दूसरे घर और एक गाँव से दूसरे गाँव तक पहुँची। इन्होंने इन कथाओं को संरक्षित किया। क्या आपको अपने क्षेत्र में प्रचलित इस तरह की कोई कथा याद है?

ऐतिहासिक तथा महाकाव्य कथाओं के संचार में कथा कहने के रूपों जैसे 'हरिकथा' और 'कबिगान' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बस्तर की मुरिया जनजाति के घोटुल या बिहार के ओरांव के धुमकुरिया जैसे युवा सभाओं में भी कथा कहने की परम्परा होती थी।

- **नौटंकी** उत्तर भारत का लोकप्रिय लोक कलारूप है जिसमें संगीत तथा न त्य का सम्मिश्रण होता है। सिनेमा के आगमन से पूर्व यह मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम था।

- **मेले तथा त्यौहार** जिनमें सामाजिक, पारम्परिक रीति–रिवाज तथा धार्मिक सम्मिलन समाहित हैं, लोगों को मिलने–जुलने तथा विचारों के आदान–प्रदान का एक मंच उपलब्ध कराते हैं।

- **लोकन त्य** एक स्थान से दूसरे स्थान पर अलग–अलग होते हैं। उदाहरण के लिए आपको पूर्वोत्तर; उड़ीसा तथा गुजरात के जनजातीय न त्यों में विविधता मिलेगी। प्रत्येक जनजाति का अपना न त्य होता है तथा पहनावा, विविध साजो–समाज, प्रतीक तथा प्रधान विचार भिन्न होते हैं।

- पारम्परिक चित्रकला, भित्ति चित्रकला, शिलालेख, प्रतिमा तथा स्तूप आदि ने एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विचारों तथा संस्क ति के हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- अन्नागार तथा पशुगाह को भी परम्परागत माध्यम के प्रकार के रूप में मान्यता है। जानवरों को बुलाने के पारम्परिक ध्वनियों या उन्हें हाँकने को भी संचार के रूप में स्वीकार किया जाता है।

आप यह स्पष्ट कर लें कि उपरोक्त वर्गीकरण केवल सामान्य या मुख्य वर्गीकरण हैं। इनके अनेक क्षेत्रीय वर्गीकरण भी हैं।

तालिका 25.1: अन्य पारम्परिक माध्यम प्रकार

(पुराण कथाएँ ● उपाख्यान ● लोककथाएँ चुटकुले ● दस्तकारी ● आल्हा/बिरहा ● मंत्र ● लोकोक्तियाँ ● पहेलियाँ ● भजन ● रीति–रिवाज ● कथाएँ ● स्थान ● मंगलगान ● शाप ● शपथ ● अपमान ● नाम ● रूढ़िगत विश्वास ● प्रत्युत्तर ● उलाहना ● खेल ● हाव–भाव ● इंद्रजाल ● लोक औषधि ● प्रतीक ● प्रार्थनाएँ ● अभ्यास ● चुटकुले से हाव–भाव ● त्यौहार ● कविताएँ ● लोक शब्दावलियाँ ● पाक शास्त्र ● साहित्यिक कलात्मक अभिव्यक्तियाँ ● कसीदाकारी रूप ● पोशाक ● कथाएँ ● कल्पित कथाएँ ● विश्वास ● न त्य ● औषधि ● वाद्ययंत्र संगीत ● रूपक ● नाम)

क्रियाकलाप 25.2: *ऊपर की सूची में से आपके दिन–प्रतिदिन के जीवन में दिखाई देने वाले पारम्परिक माध्यम रूपों की पहचान करके एक सूची बनाएँ।*

पाठगत प्रश्न 25.2

1 सही विकल्प का चयन करें:–

i) संचार एक______________________________है।

(क) विलम्बित प्रक्रिया (ख) निरन्तर प्रक्रिया (ग) सक्रिय प्रक्रिया (घ) सुप्त प्रक्रिया

ii) निम्नांकित में से कौन सा पारम्परिक माध्यम प्रकार नहीं है–

(क) पारम्परिक खेल (ख) आल्हा/बिरहा (ग) चैट शो (घ) कठपुतली

iii) 'जन माध्यम' शब्द का क्या आशय है?

(क) परम्परागत माध्यम (ख) लोक माध्यम (ग) मुद्रित माध्यम (घ) प्रसारण माध्यम

2 पारम्परिक संचार के तीन प्राचीन रूपों का उल्लेख करें

i. ________________ ii. ________________ iii________________

25.2 पारम्परिक माध्यम तथा टेलीविजन

क्या आपको कोई टेलीविजन कार्यक्रम देखने, रामलीला देखने या दादीमाँ से कहानियाँ सुनने में कोई अन्तर नजर आता है?

अब हम परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में कुछ अन्तर करेंगे:–

तालिका 25.2: परम्परागत माध्यम तथा टेलीविजन में अंतर

परम्परागत माध्यम	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
● प्रक ति से प्रौद्योगिकी रहित	● प्रक ति से प्रौद्योगिकीमूलक
● प्रक ति से लोचपूर्ण तथापि सांस्क तिक पक्ष से रूढ़	● लोचपूर्ण किन्तु सांस्क तिक रूप से स्वतंत्र
● अपेक्षाक त सस्ता माध्यम	● महँगा माध्यम जिसमें अधिक मौद्रिक निवेश की आवश्यकता।
● संदेशों का दर्शकों के सामने सजीव प्रस्तुतीकरण	● संदेशों का यांत्रिक प्रसारण।
● सीमित पहुँच	● जन समूह तक पहुँच।

चित्र 25.2 : परम्परागत माध्यम तथा टेलीविजन में अंतर

कथा कहने, रंगमंच, न त्य, गायन इत्यादि परम्परागत माध्यम रूपों में आपका शरीर ही आपका माध्यम है। आप बिना किसी जन माध्यम का प्रयोग किए संदेशों की रचना तथा संचार कर सकते हैं। आप अपना स्वयं का माध्यम भी बना सकते हैं।

उदाहरण के लिए नुक्कड़ नाटक में किसी अभिनेता समूह द्वारा लोगों के समक्ष सामाजिक तथा राजनैतिक संदेश प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें रेडियो या टेलीविजन की तरह किसी उपकरण विशेष की आवश्यकता नहीं होती।

इसी तरह बिरहा या आल्हा गायन एक लोकप्रिय रूप है जिसमें एक व्यक्ति जनता की रुचि के विषयों को गाकर प्रस्तुत करता है। इसे समझना बहुत सरल है। लेकिन साथ ही साथ इनमें समाज पर तीखे कटाक्ष भी होते हैं। यहाँ भी किसी वाद्ययंत्र, समूह या मंच की आवश्यकता नहीं होती। एक गायक जिसके पास उच्च स्वर क्षमता तथा मुद्दों की वैचारिक तथा रचनात्मक समझ हो वह प्रभावशाली परम्परागत जन माध्यम हो सकता है।

दूसरी ओर विशेषरूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए आपको निर्धारित शैली, पोशाक–संहिता, उच्चारण, साक्षरता आदि की आवश्यकता पड़ती है। इनमें सामान्यतः श्रोता की सक्रिय सहभागिता नहीं होती। लेकिन परम्परागत माध्यम अपनी प्रक ति में समावेशी होता है। यह अत्याधिक मित्रवत तथा स्थानीयता आधारित होते हैं तथा लोगों के जीवन से गहराई से जुड़े होते हैं।

25.4 संचार में परम्परागत माध्यमों का उपयोग

परम्परागत माध्यम भारत में काफी समय से प्रचलित हैं तथा ग्रामीण क्षेत्रों में संचार के माध्यम के रूप में व्यवहार में हैं। वर्षों से ग्रामीण जनता अपनी सामाजिक, परम्परागत, नैतिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति के लिए परम्परागत माध्यमों का

प्रयोग करती आई है। भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में परम्परागत माध्यमों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह लोगों को प्रभावी तरीके से उत्प्रेरित करने तथा सहमत करने में मददगार है।

उदाहरण के लिए स्वतंत्रता के संघर्ष में देशभक्ति के संदेशों को प्रसारित करने में परम्परागत माध्यमों ने महती भूमिका निभाई। लोकप्रिय अभिनेता उत्पल दत्त के अनुसार उनके द्वारा बंगला लोकनाट्य 'जात्रा' का उपयोग स्वतंत्रता संघर्ष में किया गया।

लोकगान के परम्परागत रूप 'पाला' का उपयोग उड़ीसा सरकार द्वारा विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जनजागरूकता के लिए किया गया है।

विविध सामाजिक मुद्दों जैसे एड्स, पोलियो प्रतिरक्षण आदि पर जागरूकता के लिए भारत सरकार का गीत एवं नाटक प्रभाग विविध परम्परागत माध्यमों का उपयोग करता है।

हम सभी यह जानते हैं कि त्यौहारों में मिठाइयाँ दी जाती हैं। एक–दूसरे को बधाई दी जाती है तथा अपने घरों को हम सजाते हैं। यह हमारा दूसरों के लिए प्रेम तथा भाईचारे की भावना को प्रकट करता है। यह संचार के परम्परागत माध्यम का एक उदाहरण भी है। आज हम संदेशों तथा शुभकामनाओं के प्रेषण के लिए संचार के आधुनिक माध्यमों जैसे मोबाइल तथा इंटरनेट का उपयोग करते हैं। इस प्रकार परम्परागत माध्यमों द्वारा संचार सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण में मदद करता है।

पाठगत प्रश्न 25.3

1 सही विकल्प का चुनाव करें:–

i) परम्परागत माध्यम________________माध्यम है।

(क) प्रौद्योगिकीय (ख) यांत्रिक (ग) निष्क्रिय (घ) गैर प्रौद्योगिकीय

ii) परम्परागत माध्यम में आपका शरीर आपका________________है।

(क) स्रोत (ख) शक्ति (ग) माध्यम (घ) मस्तिष्क

iii) परम्परागत माध्यम के किस रूप का उत्पल दत्त ने स्वतंत्रता संघर्ष के समय उपयोग किया?

(क) लोकगान (ख) जात्रा (ग) चित्रकला (घ) कठपुतली

iv) उड़ीसा के लोक गायन को________________कहते हैं।

(क) जात्रा (ख) पटचित्रकथा (ग) कठपुतली (घ) पाला

25.4 आपने क्या सीखा

→ परिभाषा

परम्परागत माध्यम के विविध रूपः–

● लोकन त्य ● नाटक ●चित्रकला ● गान ● मूर्तिकला ● संगीत ● प्रधान विचार तथा प्रतीक

परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में अन्त

संचार में परम्परागत माध्यम का उपयोग

- स्वतंत्रता संघर्ष में महान भूमिका निभाई।
- विविध सामाजिक मुद्दों पर जनजागरूकता हेतु उपयोग।
- मित्रता तथा प्रेम के संचार हेतु उपयोग।

25.5 पाठान्त अभ्यास

1 परम्परागत माध्यम के विविध रूपों की सोदाहरण व्याख्या करें।

2 टेलीविजन तथा परम्परागत माध्यमों के मध्य अन्तर की चर्चा करें।

3 संचार में परम्परागत माध्यम के उपयोग का वर्णन करें।

25.6 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 1. गैर–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जो हमारी संस्क ति के एक भाग के रूप में कार्य करते हैं तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परम्पराओं के हस्तान्तरण का साधन बनते हैं परम्परागत माध्यम कहलाते हैं।

2. i) कथा कहना ii) रंगोली iii) कठपुतली iv) कोई अन्य

25.2 1. i) ख ii) ग iii) ख

2. i) उद्घोषणा हेतु नगाड़े का उपयोग होता है

ii) पट चित्रकथा iii) नौटंकी iv) कोई अन्य

25.3 1. i) ख ii) ग iii) ख iv) घ